

हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में अंडमान और निकोबार त्रि-सेवा कमांड की भूमिका : भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के सन्दर्भ में

उमेश चंद्र¹

प्रो. विनोद कुमार सिंह²

सारांश

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक महत्व रखते हैं, जिसमें सीमा, वायु और समुद्री सुरक्षा शामिल है। दक्षिण-पूर्वी हिंद महासागर में स्थित ये द्वीप, 720 किमी में फैले हुए हैं, भारत का सबसे दक्षिणी बिंदु, इंदिरा प्वाइंट है, जिसे पहले पिगमेलियन प्वाइंट कहा जाता था। भारतीय मुख्य भूमि से लगभग 1200 किमी दूर द्वीपसमूह की रणनीतिक स्थिति राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। अंडमान और निकोबार कमान भारत की एकमात्र त्रि-सेवा थिएटर कमान, जिसे अक्टूबर 2001 में स्थापित किया गया था, इसके लिए केंद्रीय है। बंगाल की खाड़ी और अंडमान सागर के चौराहे पर, भू-राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण मलक्का जलडमरूमध्य के पास स्थित, हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक निवारण और शक्ति प्रक्षेपण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता यह कमान भारत की प्रमुख समुद्री मार्गों की निगरानी करने और मुख्य भूमि से दूर बल को प्रोजेक्ट करने की क्षमता को बढ़ाती है, निगरानी, टोही, पनडुब्बी रोधी युद्ध और जलस्थलीय अभियानों का समर्थन करती है। भौगोलिक अलगाव और बुनियादी ढांचे की सीमाओं जैसी चुनौतियों के बावजूद, नौसेना के हवाई स्टेशनों को उन्नत करने और योजनाओं का उद्देश्य आई. एन. एस. कोहासा रनवे को 3 किमी तक बढ़ाना है, जिससे P8i निगरानी विमानों और लड़ाकू जेट जैसे बड़े विमानों के संचालन की सुविधा होगी, जिससे भारत की शक्ति प्रक्षेपण और समुद्री डोमेन जागरूकता को बढ़ावा मिलेगा। ALH MK III जैसे उन्नत विमान प्राप्त करने जैसे चल रहे आधुनिकीकरण प्रयास इसकी क्षमताओं को मजबूत करते

¹शोध छात्र, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

²आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

हैं। अंडमान और निकोबार कमांड क्षेत्रीय सहयोग को भी सुगम बनाता है और समुद्री डोमेन जागरूकता को बढ़ाता है, जो क्षेत्र में शांति और स्थिरता के लिए एक सेतु के रूप में कार्य करता है।

मुख्य शब्द : अंडमान और निकोबार कमांड, मलक्का जलडमरूमध्य, आई. एन. एस. उत्क्रोश, आई. एन. एस. कोहासा, त्रि-सेवा कमांड

1 अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का सामरिक महत्त्व

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की स्त्रातजिक परिदृश्य: 21वीं शताब्दी में राष्ट्रीय सुरक्षा से आशय न केवल सीमा सुरक्षा है बल्कि वायु सुरक्षा एवं सामुद्रिक सुरक्षा भी शामिल है। अंडमान निकोबार द्वीपसमूह भारत का केंद्रशासित राज्य है। इसकी भौगोलिक स्थिति बंगाल की खाड़ी से दक्षिण पूर्व हिंद महासागर में स्थित है। इस द्वीपीय राज्य का विस्तार 6 डिग्री उत्तर अक्षांश से 14 डिग्री उत्तरी अक्षांश तथा 92 डिग्री पूर्व से 94 डिग्री पूर्वी देशांतर के मध्य है। यह लगभग 572 द्वीपों से मिलकर बना है जिस पर केवल 38 द्वीपों पर आबादी है शेष निर्जन है। इस द्वीप समूह का दक्षिणतम बिंदु इंदिरा प्वाइंट जिसे पहले पिगमिलियन प्वाइंट कहा जाता था यह भारत का दक्षिणतम बिंदु है। 10 डिग्री उत्तरी अक्षांश इस द्वीप को दो बराबर भाग में अलग करता है। 10 डिग्री उत्तरी अक्षांश से उत्तर की ओर अंडमान तथा 10 डिग्री उत्तरी अक्षांश से दक्षिण की तरफ निकोबार द्वीप समूह है। इस राज्य की तट रेखा भारत के समस्त तटीय राज्यों में सर्वाधिक 1962 किलोमीटर है। इस राज्य का अनन्य आर्थिक क्षेत्र भारत के 30 प्रतिशत या 60 लाख वर्ग किलोमीटर भू-भाग को कवर करता है तथा यह भारत के भू भाग का केवल 0.2 प्रतिशत है। जिस राज्य की जितनी लंबी तट रेखा होगी उतना अधिक सुरक्षा की जिम्मेदारी होती है। उक्त आंकड़ें इस द्वीप समूह के विस्तृत भू-राजनीतिक परिदृश्य की कीर्ति है। अंडमान शब्द मलयालम भाषा के हांदुमन से हुई है जो हिंदू देवता हनुमान शब्द का रूपांतरण है तथा निकोबार शब्द भी इसी भाषा से हुई है जिसका अर्थ है निर्वस्त्र लोगों की भूमि। 17वीं शताब्दी में इस द्वीप पर मराठों का शासन था तथा उसके बाद ब्रिटिश प्रशासन द्वारा शासन किया गया। ब्रिटिश शासनकाल में स्वतंत्रता सेनानियों को काला पानी की सजा के तौर पर इस द्वीप पर बने सेलुलर जेल में रखा जाता था। पोर्ट ब्लेयर में सेलुलर जेल ब्रिटिश शासनकाल में भारत के लिए साइबेरिया की तरह माना जाता था। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय इस द्वीप पर जापान ने अपना अधिकार कर लिया था उसके बाद कुछ समय के लिए नेताजी

सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज की स्वाधीनता में रहा। ब्रिटिश शासन से आजादी के पश्चात् यह द्वीप समूह भारत का केन्द्र शासित प्रदेश बना। अंडमान निकोबार की स्त्रातजिक अवस्थिति भारत सुरक्षा परिदृश्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस द्वीप समूह की उत्तरी बिंदु से म्यांमार का कोको, द्वीप जिस पर चीन अपनी निगरानी प्रणाली लगाया है, लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर है, इस द्वीप समूह के दक्षिणतम बिंदु से इंडोनेशिया का सुमात्रा द्वीप केवल 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह द्वीपसमूह भारत की मुख्य भूमि विशाखापट्टनम से लगभग 1200 किलोमीटर की दूरी पर है, जबकि यह कोलकाता से 1255 किलोमीटर की दूरी पर तथा चेन्नई से 1190 किलोमीटर की दूरी पर है। इस द्वीप से श्रीलंका का हम्बनटोटा बंदरगाह की दूरी लगभग 1400 किलोमीटर है। श्रीलंका के इस बंदरगाह पर चीन की 99 वर्ष के लिए वाणिज्यिक सुविधा प्राप्त है। अतः यह भारत के साथ साथ हिन्द महासागर परिक्षेत्र के लिए भी इसका महत्व है। एक अति महत्वपूर्ण जलसन्धि मलक्का जलडमरूमध्य जो अंडमान सागर (हिंद महासागर) और दक्षिण चीन सागर (प्रशांत महासागर) को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण जल मार्ग है। यह अंडमान निकोबार द्वीपसमूह से लगभग 1100 किलोमीटर की दूरी पर है। पूर्वी एवं दक्षिणी एशियाई देशों को जाने वाली व्यापारिक जहाजों का आवागमन मलक्का जलडमरूमध्य से होता है अतः इस पर चीन की जहाजों की निगरानी रखी जा सकती है। चीनी नेता हू जिन ताओ ने नंबर 2003 में मलक्का दुविधा की संकल्पना प्रस्तुत किया था।

2 अंडमान और निकोबार त्रि-सेवा कमांड का विकास

शीत युद्ध के बाद के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के परिणामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में वैश्वीकरण की लहर के कारण भू-रणनीतिक और सुरक्षा वातावरण में बड़े बदलाव हुए। इस बदलते परिदृश्य में, भारत की पूर्व की ओर देखो नीति के अनुसार, अंडमान और निकोबार कमान का महत्व महान रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं को दर्शाता है। अंडमान और निकोबार कमान हमें नौसेना की विश्वसनीयता को सुरक्षित रखने और कम से कम अपने आसपास के भू-रणनीतिक क्षेत्र में निर्णायक बनने की भारत की भविष्य की रणनीतिक महत्वाकांक्षा की एक झलक प्रदान करता है। चूंकि समकालीन समय अवधि को एशिया की सदी और महासागरों के समय के रूप में चरणबद्ध किया गया है, इसलिए अंडमान और निकोबार कमान के भू-राजनीतिक महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। भू-रणनीतिक रूप से, ये द्वीपसमूह भारत के

भूभाग से 1,500 किलोमीटर दूर पाए जाते हैं; वे भारत को इंडो-पैसिफिक तक पहुँचने में मदद करते हैं।

भारतीय रक्षा मंत्रालय ने उनके महत्वपूर्ण महत्व को तब पहचाना जब उसने अक्टूबर 2001 में वहाँ भारत की एकमात्र संयुक्त कमान पोस्ट बनाई। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह बहुत ही रणनीतिक रूप से स्थित हैं। वे संचार की संपूर्ण समुद्री लाइनों और चोक पॉइंट्स (हिंद महासागर क्षेत्र में) पर नज़र रखते हैं। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की मलक्का जलडमरूमध्य से निकटता उन्हें क्षेत्र की निगरानी और चोक पॉइंट्स को निगरानी में रखने के संबंध में बहुत ही रणनीतिक बनाती है, नौसेना प्रमुख एडमिरल आर. के. धोवन ने अपने वार्षिक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा है। इस कथन के अनुसार, यह स्पष्ट है कि भारत की विस्तारित भुजाओं के रूप में जाने वाले अंडमान और निकोबार द्वीप समूह देश की सुरक्षा चिंताओं का अभिन्न अंग हैं। भारत की मुख्य भूमि से काफी दूर बंगाल की खाड़ी के दक्षिणी भाग में स्थित है। उत्तर की ओर, ये द्वीपसमूह म्यांमार (बर्मा) से केवल 22 समुद्री मील की दूरी पर हैं, और सबसे दक्षिणी बिंदु (इंदिरा पॉइंट) से वे इंडोनेशिया से 99 समुद्री मील की दूरी पर हैं। उथल-पुथल के सभी वर्षों में हिंद महासागर शांत रहा और शक्तिशाली प्रतिस्पर्धा और जुड़ाव के लिए एक महत्वपूर्ण रंगमंच के रूप में फिर से उभर रहा है। चीन, अपने हितों को सुरक्षित रखने के लिए मुख्य प्रतिस्पर्धी होने के नाते, हिंद महासागर में अपनी नाटकीय पहुंच का विस्तार कर रहा है और इस क्षेत्र में तटीय राज्यों के साथ आर्थिक और रणनीतिक रूप से अपने संबंधों को मजबूत कर रहा है। भारत ने इस क्षेत्र में अपनी विशाल और निर्णायक स्थिति बनाए रखने के लिए एक नई नौसैनिक रणनीति का निर्माण शुरू कर दिया है। जबकि भारत के हिंद महासागर में चीन की भागीदारी के बारे में चिंतित होने का मुख्य कारण दक्षिण एशियाई नौसैनिक क्षेत्र में विकास और उन्नति है जो प्रमुख मुद्दों में से एक है। मलक्का जलडमरूमध्य के पास उनकी महत्वपूर्ण उपस्थिति के कारण, जो पूर्व की ओर व्यापार का एक प्रमुख अवरोधक बिंदु है, ये दोनों द्वीप इस क्षेत्र में नौसैनिक गतिशीलता को महत्वपूर्ण रूप से बदल सकते हैं। जबकि द्वीपों ने रणनीतिक उन्नति और आक्रामक क्षमताओं को प्राप्त करने के लिए एक मंच देखा है, अब तक उनका वास्तविक लाभ समुद्री आर्थिक प्रभुत्व और चेतना का विस्तार करने और नौसैनिक लाभ को बनाए रखने में है, जैसा कि दक्षिण चीन सागर में चीन द्वारा किया जा रहा है। अपनी राष्ट्रीय रणनीति में इन द्वीपों की भूमिका के लिए एक स्पष्ट

रणनीति बनाने के अलावा भारत को द्वीप के बुनियादी ढाँचे के पिछड़ेपन को दूर करने में अपने सहयोगी भागीदारों की क्षमताओं का बुद्धिमानी से उपयोग करने के लिए नए मानक भी तैयार करने चाहिए। जैसा कि भारत अतीत में अपनी समुद्री प्राथमिकताओं की अनदेखी करता रहा है, इतिहास में नौसैनिक क्षेत्र अंडमान और निकोबार कमान यह उसे अपने विस्तृत तट और आर्थिक क्षमताओं के साथ-साथ सैन्य शक्ति का उपयोग करके खुद को एक प्रमुख क्षेत्रीय अभिनेता बनाने का अवसर देता है। ये नौसैनिक विकास भारत के लिए अपने पड़ोस में उभरते और हावी होते चीन को रोकने और उसका मुकाबला करने का मार्ग प्रशस्त करेंगे। अपनी बढ़ती अर्थव्यवस्था और हर आयाम में महाशक्ति बनने के सपने के साथ भारत हिंद महासागर में अपना प्रभाव बढ़ाने की तैयारी कर रहा है। इतिहास हमें महाशक्ति बनने के लिए कुछ आवश्यकताओं को बताता है, जिनमें से एक इस क्षेत्र में अंडमान और निकोबार कमान नौसैनिक श्रेष्ठता है। अंडमान और निकोबार कमान भारत को बंगाल की खाड़ी के पार अपनी नौसैनिक शक्ति का दावा करने के लिए एक आधार और क्षेत्र प्रदान करता है। नौसैनिक उपस्थिति के अलावा, यह क्षेत्र उन संसाधनों से भी समृद्ध है जिनकी तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था को आवश्यकता है।

इस द्वीपसमूह के दक्षिणी भाग में अपने अंडमान और निकोबार कमान सैन्य अड्डे के साथ भारत हिंद महासागर में ऊर्जा और तेल कार्गो के लिए पुलिस अधिकारी की भूमिका निभाने के लिए खुद को तैयार कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में हर दूसरी शक्ति की तरह, भारत भी न केवल प्रभाव के विस्तार पर नज़र रख रहा है, बल्कि प्रमुख व्यापार मार्गों को सुरक्षित करके अपनी अर्थव्यवस्था को भी सुरक्षित करना चाहता है। ये द्वीपसमूह 572 द्वीपों का एक समूह है जो 720 किलोमीटर लंबी श्रृंखला में फैले हुए हैं, जो समुद्र तल से लगभग 1,200 किलोमीटर दूर हैं। दक्षिणी और पूर्वी तटों पर स्थित, सैन्य अड्डा ऐसे क्षेत्र की रक्षा करता है जो देश के भूभाग का मात्र 0.2% है, लेकिन इसे अपने अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ) के 30% की सुरक्षा का काम सौंपा गया है। विशेष रूप से, ये द्वीपसमूह नई दिल्ली के रणनीतिक और राजनीतिक श्वेत पत्र में पिछली सीट पर मौजूद रहे हैं, विशेष रूप से उनकी दूरी (मुख्य भूमि से लगभग 1200 किलोमीटर) को देखते हुए। नौसेना पदानुक्रम के भीतर प्राथमिकताएँ पाकिस्तान के साथ प्रतिद्वंद्विता के कारण भारत के समुद्र तट को मजबूत करने पर केंद्रित हैं, जबकि

इन द्वीपों में आने वाले समय में वास्तव में मजबूत रणनीतिक बिंदुओं के रूप में उपयोग किए जाने की क्षमता है। हालांकि, महासागर क्षेत्र में वर्तमान विकास एशिया के कई देशों ने भारत को अपनी समुद्री चेकलिस्ट को संशोधित करने के लिए प्रेरित किया है, और वर्तमान सरकार भी समुद्री सुरक्षा को मजबूत करने के लिए अधिक प्रयास कर रही है। रणनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में पहला कदम अंडमान और निकोबार कमांड का गठन था, जिसने इन कमांड के तहत किसी चरण में आक्रामक और रक्षात्मक क्षमताओं को तैनात करके पूरे क्षेत्र में रणनीति के बड़े फेरबदल की भविष्यवाणी की। अंडमान और निकोबार कमान भारत की पहली कमांड है जिसमें तट रक्षक के साथ-साथ तीनों सैन्य सेवाओं को एक बैनर के तहत शामिल किया गया है। इसका कमांडर-इन-चीफ सशस्त्र बलों के तीनों समूहों से आता है। ए.एन.सी. अपने तट के साथ गार्ड डिवीजन ने सुनामी प्रभावित क्षेत्रों में सहायता करके एक अनुकरणीय भूमिका निभाई है। भारत वहां रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे में अपनी सुरक्षा क्षमता को अधिकतम कर रहा है ताकि वे आई.ओ.आर. में चीनी नौसेना की गतिविधियों की निगरानी भी कर सकें, जिसका उपयोग विमान, जहाज और पनडुब्बियों को रखने के लिए भी किया जा सकता है। परमाणु परिसर और सैन्य रनवे का विस्तार भी समुद्र में भारतीय पकड़ बढ़ाने के महत्वपूर्ण कारकों में से एक है।

आई. एन. एस. कोहासा

आई.एन.एस. कोहासा भारतीय सशस्त्र बलों की अंडमान और निकोबार कमान के अंतर्गत एक भारतीय नौसैनिक हवाई अड्डा है। यह उत्तरी अंडमान द्वीप के एक गाँव शिबपुर में स्थित है। इस नौसैनिक हवाई अड्डे की स्थापना 2001 में उत्तरी अंडमान में बेहतर निगरानी के लिए एक अग्रिम परिचालन हवाई अड्डे के रूप में की गई थी। वर्तमान में नौसेना और भारतीय तटरक्षक बल के डोर्नियर 228 विमान और चेतक हेलीकॉप्टर उत्तरी अंडमान द्वीप समूह की निगरानी करते हैं। नौसेना और तटरक्षक बल के डोर्नियर 228 ने इसी नौसैनिक हवाई अड्डे से मलेशिया एयरलाइंस की उड़ान 370 की खोज की थी। आई.एन.एस. कोहासा रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक व्यापक सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारतीय नौसेना की भूमिका को और मजबूत करेगा। यह अंडमान और निकोबार कमान की आपात स्थितियों पर त्वरित प्रतिक्रिया देने की क्षमता को बढ़ाएगा। आई.एन.एस. कोहासा

भारत सरकार की 'उड़े देश का आम नागरिक' योजना के अनुरूप सैन्य और नागरिक दोनों विमानों के संयुक्त संचालन के लिए एक अड्डे के रूप में कार्य करेगा। यह हवाई अड्डा न केवल द्वीपसमूह की सुरक्षा के लिए, बल्कि इसके समग्र विकास के लिए भी रणनीतिक महत्व रखता है। आई.एन.एस. कोहासा, कोको द्वीप समूह से इसकी निकटता तथा चीन की किसी भी गतिविधि पर नजर रखने की इसकी क्षमता इसे अत्यधिक सामरिक महत्व प्रदान करती है।

आई. एन. एस. उत्क्रोश

जैसे ही अंडमान सागर के नीले पानी पर सूर्योदय होता है। आई. एन. एस. उत्क्रोश अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के हृदय में शक्ति और लचीलेपन का एक प्रहरी बनकर खड़ा होता है। अंडमान और निकोबार कमान का सबसे बड़ा हवाई अड्डा आई. एन. एस. उत्क्रोश, भारत के समुद्री हितों की रक्षा के लिए उत्कृष्टता और समर्पण की अपनी विरासत को कायम रखे हुए है। 1985 में स्थापित आई. एन. एस. उत्क्रोश इस क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा की आधारशिला के रूप में उभरा है जो रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण उपस्थिति बनाए रखने के लिए भारतीय नौसेना की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित और नौसेना कर्मियों की एक समर्पित टीम द्वारा संचालित यह एपर स्टेशन समुद्री शक्ति को प्रदर्शित करने और क्षेत्र में समुद्री डोमेन जागरूकता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आई. एन. एस. उत्क्रोश की परिचालन क्षमता का केन्द्र बिन्दु इसके विमानों का विशाल बेड़ा है। इस बीच स्वदेशी ए.एल.एच., जो एयरोस्पेस प्रौद्योगिकी में भारत की बढ़ती हुई क्षमता का प्रमाण है आई. एन. एस. उत्क्रोश की परिचालन लचीलापन और चपलता को बढ़ाता है तथा अद्वितीय दक्षता के साथ विविध समुद्री वातावरण में परिचालन करने में सक्षम है।

अपनी परिचाल क्षमताओं के अलावा आई.एन.एस. उत्क्रोश भारतीय सशस्त्र बलों और अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों की विभिन्न शाखाओं के बीच प्रशिक्षण सहयोग और अंतर संचालन के लिए एक केन्द्र बिन्दु के रूप में कार्य करता है। संचार के प्रमुख समुद्री मार्गों के चौराहे पर इसकी रणनीतिक स्थिति इसे संयुक्त अभ्यास प्रशिक्षण कार्यक्रमों और रणनीतिक संलग्नताओं के लिए एक आदर्श केंद्र बनाती है, जो हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में भारत की समुद्री सुरक्षा संरचना को और मजबूत बनाती है। आई.एन.एस. उत्क्रोश अपनी लगभग चार दशकों की सेवा

का स्मरण करता है। यह उन महिलाओं और पुरुषों की अटूट प्रतिबद्धता और समर्पण का प्रमाण है। जिन्होंने इसमें सेवा की है।

3 भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा में अंडमान और निकोबार त्रि-सेवा कमांड की भूमिका

3.1 संचार के समुद्री मार्गों को सुरक्षित करना

एस.एल.ओ.सी. एक शब्द है जो बंदरगाहों के बीच प्राथमिक समुद्री मार्गों का वर्णन करता है, जिसका उपयोग व्यापार, रसद और नौसैनिक बलों के लिए किया जाता है। इंडो-पैसिफिक में संचार की समुद्री लाइनें क्षेत्र में आर्थिक विकास और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन इस पर नीतिगत ध्यान कम दिया जाता है। भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के दौर में, क्षेत्रीय शक्तियाँ विवादित स्थानों में विशेष पहुँच बनाए रखने के लिए सैन्य प्रयास करने में अनिच्छुक हैं, संयुक्त सैन्य प्रयास बड़े पैमाने पर सुरक्षा के गैर-पारंपरिक क्षेत्रों तक ही सीमित हैं। कोविड-19 महामारी, यूक्रेन में युद्ध और अंतरराष्ट्रीय खतरों की उभरती प्रकृति ने राष्ट्रीय हित के मुख्य क्षेत्रों से परे क्षेत्रों में सैन्य अभियानों के लिए क्षेत्रीय इच्छा को और कम कर दिया है। चूंकि समुद्री रेखाएं हिंद-प्रशांत देशों के अस्तित्व और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हैं, इसलिए SLOC सुरक्षा की रक्षा सभी क्षेत्रीय देशों के हित में है। चूंकि दुनिया के महासागर एक अभिन्न अंग हैं, इसलिए कोई भी देश अकेले समुद्री रेखाओं के विस्तृत दायरे की रक्षा नहीं कर सकता। कई मायनों में, SLOC शास्त्रीय बहुपक्षीय समुद्री सुरक्षा हित है और यह इस बात का सबसे बुनियादी प्रदर्शन प्रदान करता है कि किसी देश के समुद्री सुरक्षा हित उसके अपने जल से परे कैसे फैले हुए हैं। इस संबंध में पहले से ही सफल मिसालें हैं। मलक्का जलडमरूमध्य में सिंगापुर और इंडोनेशिया के बीच संयुक्त समुद्री संचालन योजना दल इसका एक अच्छा उदाहरण है। 1992 में कुआलालंपुर में अंतराष्ट्रीय समुद्री ब्यूरो द्वारा स्थापित क्षेत्रीय समुद्री डकैती केंद्र, जो सूचना और रिपोर्टिंग केंद्र के रूप में काम करने के लिए श्रीलंका के पूर्व से लेकर दक्षिण पूर्व एशिया और सुदूर पूर्व तक के सभी देशों को कवर करता है, एक और उदाहरण है। लेकिन ऐसा सीमित सहयोग पर्याप्त नहीं है। समुद्री रेखाओं के रखरखाव और सुरक्षा के लिए आगे सहकारी दृष्टिकोण विकसित करने की बहुत आवश्यकता है। सबसे पहले, समुद्र में सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एस.एल.ओ.सी. सुरक्षा से संबंधित यू.एन.सी.एल.ओ.एस. की शर्तों की आम समझ और व्याख्या बहुत जरूरी है। यू.एन.सी.एल.ओ.एस. की शर्तों की आम

व्याख्या सुनिश्चित करने से शासन के आवश्यक नियमों की एकरूपता और स्वीकृति को बढ़ावा मिल सकता है और एक स्थिर समुद्री शासन बनाने में मदद मिल सकती है। व्याख्या पर आम सहमति होने पर, देश एक साथ तटीय राज्यों के संप्रभुता और आसन्न समुद्री क्षेत्रों पर अधिकार क्षेत्र के दावों की बाहरी सीमाओं को स्पष्ट कर सकते हैं। क्षेत्रीय देश अपने बेसलाइन और समुद्री अधिकार क्षेत्र से संबंधित भौगोलिक निर्देशांक के चार्ट या सूचियों का प्रचार भी कर सकते हैं। इसके अलावा, देश उच्च समुद्र पर अंतरराष्ट्रीय नेविगेशन के मानदंडों की गारंटी के लिए उच्च समुद्र पर कानून प्रवर्तन में सहयोग के बारे में समझौते पर पहुंच सकते हैं। संभावित संघर्ष जैसे कि अक्टूबर 1994 में पीले सागर में यू.एस.एस. किट्टी हॉक द्वारा चीनी पनडुब्बी का पीछा करने और उसे धमकाने के साथ हुआ था, से बचा जाना चाहिए। दूसरा, द्वीपों के संप्रभुता विवादों और अतिव्यापी समुद्री दावों का उचित समाधान क्षेत्रीय नेताओं के एजेंडे में रखा जाना चाहिए। एक समीचीन उपाय के रूप में, एक संयुक्त गश्ती क्षेत्र और एक संयुक्त विकास क्षेत्र की स्थापना शुरू की जा सकती है। तीसरा, तेल और गैस आयात परिवहन सुरक्षा की गारंटी के तरीकों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

चौथा, नौसेना सहयोग SLOC सुरक्षा के लिए विशेष महत्व रखता है। CBM के लिए द्विपक्षीय और बहुपक्षीय नौसेना सहयोग समुद्री सुरक्षा वातावरण में अनिश्चितता को कम करेगा। SLOC की सुरक्षा के लिए ठोस सहकारी दृष्टिकोण तैयार किए जाने चाहिए, विशेष रूप से उन गैर-पारंपरिक खतरों से निपटने के तरीके। इनमें मानवीय सहायता, खोज और बचाव (SAR), समुद्र में घटना से बचाव (INCSEA) समझौते, समुद्री डकैती विरोधी सहयोग, सहकारी समुद्री निगरानी और खदान विरोधी उपाय शामिल हो सकते हैं। समुद्री सुरक्षा के मुद्दों में दो क्षेत्रीय संगठन लगे हुए हैं। हाल के वर्षों में शिपिंग और समुद्री सुरक्षा में क्षेत्रीय सहयोग को आगे बढ़ाने में APEC सक्रिय रहा है। APEC के तहत परिवहन कार्य समूह ने समुद्री वाणिज्य को सुविधाजनक बनाने के लिए कई पहल की हैं। ARF (ASEAN क्षेत्रीय मंच) ने समुद्री सहयोग के क्षेत्र में कदम रखना शुरू कर दिया है। इसने नवंबर 1998 में होनोलुलु में ए.आर.एफ. समुद्री विशेषज्ञ अधिकारियों की बैठक की सह-अध्यक्षता करने के लिए अमेरिका और थाईलैंड को आमंत्रित किया, जो सीबीएम पर अंतर-सत्रीय सहायता

समूह की बैठक के साथ संयोजन में थी। क्षेत्रीय एस.एल.ओ.सी. सुरक्षा सहयोग दो मौजूदा क्षेत्रीय संगठनों में से एक के ढांचे के अंतर्गत आ सकता है।

4 अंडमान और निकोबार त्रि-सेवा कमांड के समक्ष चुनौतियां

अंडमान और निकोबार त्रि-सेवा कमान, भारत की एकमात्र एकीकृत सैन्य कमान है, जो बंगाल की खाड़ी में स्थित होने के कारण महत्वपूर्ण रणनीतिक महत्व रखती है, जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र में महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों की देखरेख करती है। हालांकि, कई चुनौतियां इसकी परिचालन दक्षता और क्षमता में बाधा डालती हैं। भू-रणनीतिक भेद्यता द्वीप भौगोलिक रूप से अलग-थलग हैं, जिससे वे बाहरी खतरों और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं। भारतीय मुख्य भूमि से उनकी दूरी (लगभग 1,200 किमी) संकट के समय में समय पर रसद और सैन्य सहायता को जटिल बनाती है। बुनियादी ढांचे की सीमाएँ अपने रणनीतिक महत्व के बावजूद, यह क्षेत्र अपर्याप्त बुनियादी ढांचे से ग्रस्त है। सीमित हवाई पट्टियाँ, अविकसित बंदरगाह और सीमित रसद बलों और आपूर्ति की आवाजाही को प्रतिबंधित करते हैं। कठोर भूभाग और पर्यावरणीय नियम रक्षा तैयारियों के लिए महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं में और देरी करते हैं। अंतर-सेवा समन्वय जबकि त्रि-सेवा कमान का उद्देश्य सेना, नौसेना और वायु सेना के बीच संयुक्तता को बढ़ावा देना है, निर्बाध अंतर-संचालन प्राप्त करना एक चुनौती बनी हुई है। सेवाओं के बीच कमांड संरचनाओं, परिचालन सिद्धांतों और संचार प्रणालियों में अंतर निर्णय लेने की प्रक्रिया को धीमा कर देता है और परिचालन दक्षता को कम करता है।

साइबर और तकनीकी अंतर कमांड को आधुनिक युद्ध में मानव रहित और अंतरिक्ष-आधारित प्रणालियों के बढ़ते उपयोग और उभरते साइबर खतरों से निपटना होगा। मजबूत निगरानी, सुरक्षित संचार और तकनीकी आधुनिकीकरण सुनिश्चित करना एक निरंतर आवश्यकता है। पर्यावरण और कानूनी बाधाएँ अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील हैं, और रक्षा अवसंरचना परियोजनाओं को अक्सर कानूनी और पर्यावरणीय बाधाओं का सामना करना पड़ता है। पारिस्थितिकी संरक्षण के साथ सुरक्षा आवश्यकताओं को संतुलित करना एक सतत मुद्दा बना हुआ है। रसद और मानव संसाधन बाधाएँ सैनिकों का नियमित रोटेशन, विशाल समुद्री दूरी पर आपूर्ति श्रृंखलाओं को बनाए रखना, और सीमित नागरिक-सैन्य तालमेल परिचालन

तत्परता पर और अधिक बोझ डालते हैं। इस क्षेत्र के रणनीतिक लाभ का पूरी तरह से दोहन करने के लिए, इन चुनौतियों को केंद्रित निवेश, नीति सुधारों और अधिक अंतर-एजेंसी सहयोग के माध्यम से संबोधित किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कमांड भारत की समुद्री और क्षेत्रीय सुरक्षा वास्तुकला के एक मजबूत स्तंभ के रूप में विकसित हो। एक व्यापक सुरक्षा प्रदाता बनने में भारत का मुख्य लाभ उसकी सैन्य और नौसैनिक क्षमताएँ हैं। हिंद महासागर भारतीय नौसेना का पिछवाड़ा है, और यह समुद्री संचार लाइनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत अपनी नौसेना का आधुनिकीकरण करके और विमानवाहक पोत, परमाणु पनडुब्बी और उन्नत निगरानी प्रणालियों जैसी अधिक समुद्री संपत्तियाँ प्राप्त करके अपनी अंडमान और निकोबार त्रि-सेवा कमांड एक शक्ति का प्रदर्शन कर सकता है और संभावित खतरों को रोक सकता है। संयुक्त अभ्यास (जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मालाबार अभ्यास), गश्त और सूचना साझाकरण पर महत्वपूर्ण भागीदारों के साथ सहयोग सामूहिक सुरक्षा क्षमताओं में सुधार करता है, जिसके परिणामस्वरूप हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक अधिक स्थिर समुद्री वातावरण बनता है।

5 अंडमान और निकोबार त्रि-सेवा कमांड को मजबूत करने का अवसर

5.1 बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण

समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए, स्वदेशी एडवांस्ड लाइट हेलीकॉप्टर (ALH) MK III विमान को 28 जनवरी, 2022 को पोर्ट ब्लेयर में कमांडर-इन-चीफ, अंडमान और निकोबार कमांड (CINCAN) लेफ्टिनेंट जनरल अजय सिंह द्वारा INS उत्क्रोश में औपचारिक रूप से शामिल किया गया। जैसे ही बहुमुखी हेलीकॉप्टर के रोटर ब्लेड हवा में उड़े, पारंपरिक वाटर कैनन सलामी के साथ विमान का औपचारिक रूप से ANC में स्वागत किया गया। यह शामिल होना भारत के एकमात्र संयुक्त थिएटर कमांड के रूप में इसके गठन के पिछले दो दशकों में अंडमान और निकोबार कमांड की क्षमताओं में निरंतर वृद्धि को दर्शाता है। (ALH) MK III विमान हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड द्वारा निर्मित है और यह सरकार के आत्मनिर्भर भारत अभियान के अनुरूप सैन्य विमानों के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक जबरदस्त छलांग है। अब तक, इनमें से 300 से अधिक

विमान एच.ए.एल. द्वारा वितरित किए जा चुके हैं और सशस्त्र बलों द्वारा उड़ाए जा रहे हैं। इसके वेरिएंट में, MK III वेरिएंट एक समुद्री भूमिका वाला वेरिएंट है जिसमें अत्याधुनिक सेंसर और हथियार शामिल हैं जो समुद्र में भारत की ताकत को और बढ़ाते हैं। (ALH) MK III विमान अपने ग्लास कॉकपिट, शक्ति इंजन, उन्नत समुद्री गश्ती रडार, इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल पेलोड और नाइट विजन डिवाइस के साथ भारत के सुदूर पूर्वी समुद्री तट और द्वीप क्षेत्रों को सुरक्षित रखने में एक बल गुणक के रूप में कार्य करेगा। अत्याधुनिक विमान में समुद्री निगरानी, विशेष बलों के लिए सहायता, चिकित्सा निकासी के अलावा खोज और बचाव भूमिकाओं सहित बहु-भूमिका क्षमताएं हैं। इस अवसर पर लेफ्टिनेंट जनरल अजय सिंह ने कहा कि इस बल को अंडमान एवं निकोबार की सुरक्षा के लिए एक बड़ा कदम बताया। उन्होंने कहा कि यह बल देश की सुरक्षा में आत्मनिर्भर होने और इस क्षेत्र में शांति बनाए रखने के संकल्प का प्रतीक है।

5.2 क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाना

अंडमान और निकोबार कमांड, भारत की एकमात्र त्रि-सेवा थिएटर कमांड है, जो इंडो-पैसिफिक में क्षेत्रीय सहयोग और समुद्री सुरक्षा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों के चौराहे पर रणनीतिक रूप से स्थित, अंडमान और निकोबार कमांड भारत को शक्ति प्रदर्शित करने और पूर्वी हिंद महासागर में समुद्री डोमेन जागरूकता सुनिश्चित करने में सक्षम बनाता है। सेना, नौसेना और वायु सेना के बीच समन्वित प्रयासों के माध्यम से, कमांड मानवीय सहायता, आपदा राहत (HADR), समुद्री डकैती विरोधी मिशन और क्षेत्रीय भागीदारों के साथ संयुक्त सैन्य अभ्यास का समर्थन करता है। MILAN नौसैनिक अभ्यास जैसे नियमित जुड़ाव ASEAN और QUAD देशों के साथ विश्वास और अंतर-संचालन को बढ़ावा देते हैं, जो एक स्वतंत्र, खुले और नियम-आधारित इंडो-पैसिफिक के लिए भारत की प्रतिबद्धता को मजबूत करते हैं। ANC एक महत्वपूर्ण रसद और निगरानी केंद्र के रूप में भी कार्य करता है, जो क्षेत्रीय संकटों पर तेजी से प्रतिक्रिया करने में सक्षम बनाता है। बहुपक्षीय संवाद और संयुक्त अभ्यास की मेजबानी करके, यह रक्षा कूटनीति को मजबूत करता है और दक्षिण पूर्व एशिया में भारत के रणनीतिक प्रभाव को बढ़ाता है। बुनियादी ढांचे में वृद्धि, खुफिया जानकारी साझा करने की प्रणाली और

परिचालन तालमेल से सामूहिक क्षेत्रीय सुरक्षा में योगदान देने की ए.एन.सी. की क्षमता और बढ़ेगी। कुल मिलाकर, अंडमान और निकोबार कमान न केवल भारत की समुद्री रक्षा स्थिति को मजबूत करती है, बल्कि क्षेत्रीय सहयोग के लिए एक सेतु के रूप में भी काम करती है, जिससे क्षेत्र में शांति, स्थिरता और सहकारी सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

5.3 समुद्री क्षेत्र जागरूकता MAD को बढ़ावा देना

समुद्री डोमेन जागरूकता (एम.डी.ए.) समुद्र में परिस्थितिजन्य जागरूकता की आवश्यकता को दर्शाता है, जिसके लिए सभी आयामों में सभी समुद्री अभिनेताओं की स्थिति और इरादों के बारे में जागरूक होना आवश्यक है— समुद्र के ऊपर, ऊपर और नीचे। एम.डी.ए. समुद्री गतिविधि के सुरक्षित और कुशल संचालन के लिए तेजी से एक पूर्व-आवश्यकता बन रहा है, जो खुद वैश्विक आर्थिक विकास के लिए एक प्रमुख इंजन है। न केवल समुद्र की प्राकृतिक अनिश्चितताओं के बारे में ज्ञान, बल्कि मानवीय गतिविधि के कारण संभावित चुनौतियों के बारे में भी ज्ञान, इस गतिविधि की समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक अनिवार्य बन गया है। समुद्री क्षेत्र अपने विस्तार और इस क्षेत्र का उपयोग करने वाले अभिनेताओं दोनों के संदर्भ में जटिल है। समुद्र के कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीएलओएस) तटीय राज्यों से निकटता के आधार पर समुद्री क्षेत्र को वर्गीकृत करता है। जबकि किसी देश के समुद्र तट से 200 समुद्री मील तक का समुद्र तटीय क्षेत्र तटीय राज्यों के अधिकार क्षेत्र में आता है (क्षेत्रीय जल, समीपवर्ती क्षेत्र और विशेष आर्थिक क्षेत्र में अधिकार क्षेत्र में भिन्नता के साथ), फिर भी समुद्री क्षेत्र का एक बड़ा क्षेत्र, उच्च समुद्र, काफी हद तक अनियंत्रित रहता है और जरूरी नहीं कि उस पर निगरानी रखी जाती हो। तटीय राज्यों के अधिकार क्षेत्र के तहत आने वाले बड़े क्षेत्रों पर भी निगरानी नहीं होती है, या तो तटीय राज्य की क्षमता की कमी के कारण या भौगोलिक सीमाओं के कारण। महासागर का विस्तार इतना बड़ा है कि सक्षम समुद्री बलों वाले तटीय राज्यों के लिए भी अपने समुद्री अधिकार क्षेत्र के संबंधित क्षेत्रों की पूरी निगरानी सुनिश्चित करना मुश्किल हो सकता है। भूमि और उसके आस-पास के हवाई क्षेत्र के विपरीत, जहां निश्चित निगरानी/निगरानी प्रणाली लगभग पूरी स्थिति की जानकारी सुनिश्चित कर सकती है, समुद्री क्षेत्र में ऐसी पारदर्शिता नहीं है क्योंकि पानी के ऊपर ऐसी प्रणालियों को स्थापित करना असंभव है। डोमेन के बढ़ते उपयोग ने तटीय राज्यों के अलावा अन्य हितधारकों और संस्थाओं

को शामिल करने के लिए अभिनेताओं की संख्या में भी वृद्धि की है। जबकि वाणिज्यिक शिपिंग, सैन्य जहाज और मछली पकड़ने वाले जहाज पारंपरिक रूप से समुद्री क्षेत्र में आते रहे हैं, नए उपयोगकर्ता जैसे कि अवकाश शिल्प, मानव रहित जहाज, अपतटीय प्रतिष्ठान, समुद्री अनुसंधान उपकरण, अपतटीय पवन, सौर और भूतापीय ऊर्जा फार्म, पानी के नीचे केबल, पानी के नीचे पाइपलाइन और इसी तरह की चीजों ने इस यातायात को और बढ़ा दिया है। समुद्री क्षेत्र की सदियों पुरानी चुनौतियाँ जैसे कि समुद्री डकैती, डकैती, मानव तस्करी, तस्करी, हथियार और ड्रग्स अभी भी इस क्षेत्र में व्याप्त हैं। संचार और धोखे की आधुनिक तकनीकों के साथ मिलकर, इन चुनौतियों ने खतरनाक रूप धारण कर लिया है। अभिनेताओं और विभिन्न हितों की इतनी जटिल श्रृंखला के साथ पूरे समुद्री क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बहुत उच्च स्तर की परिस्थितिजन्य जागरूकता की आवश्यकता होती है। जबकि पूरे समुद्री क्षेत्र की परिस्थितिजन्य जागरूकता संभव नहीं हो सकती है और इसकी आवश्यकता भी नहीं हो सकती है, रुचि के क्षेत्रों का एम.डी.ए. बिल्कुल आवश्यक है। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जो हाल के वर्षों में दुनिया का ध्यान केंद्रित कर रहा है, खासकर चीन के उदय के कारण। वहीं भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा में अंडमान निकोबार कमाण्ड समुद्री डोमेन जागरूकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

6 निष्कर्ष

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक महत्व रखते हैं। अंडमान और निकोबार कमांड, भारत की एकमात्र त्रि-सेवा थिएटर कमांड, इंडो-पैसिफिक में भारत की स्थिति के लिए मौलिक है। मलक्का जलडमरूमध्य के पास रणनीतिक रूप से स्थित, अंडमान और निकोबार कमांड भारत के समुद्री हितों की रक्षा के लिए एक अग्रिम आधार के रूप में कार्य करते हुए रणनीतिक निरोध और शक्ति प्रक्षेपण को सक्षम बनाता है। यह प्रमुख समुद्री मार्गों की निगरानी और विशेष रूप से चीन से बढ़ते क्षेत्रीय प्रभाव का मुकाबला करने के लिए महत्वपूर्ण है। भौगोलिक अलगाव और बुनियादी ढाँचे की सीमाओं जैसी चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, नौसेना के हवाई स्टेशनों को अपग्रेड करने और ALH MK III जैसे उन्नत प्लेटफार्मों को एकीकृत करने जैसे चल रहे आधुनिकीकरण प्रयास इसकी क्षमताओं को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा रहे हैं। एक मजबूत अंडमान

और निकोबार कमांड समुद्री डोमेन जागरूकता (MDA) को बढ़ावा देने और क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है, जो क्षेत्र में शांति और स्थिरता की गारंटी के रूप में भारत की भूमिका को मजबूत करता है।

सन्दर्भ:

Pandey, & Verma, Sachin Kumar. (2021). (China's policy in the Indo-Pacific region and the coastal security challenges and options of the Andaman and Nicobar Islands) हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में चीन की नीति तथा अंडमान निकोबार द्वीपसमूह के तटीय सुरक्षा चुनौतियाँ एवं विकल्प. 4. 35-38

बोस, एस., और बसु रे चौधरी, ए. (2024)। भारत और एक स्थिर इंडो-पैसिफिक: बंगाल की खाड़ी में समुद्री सुरक्षा चुनौतियों का प्रबंधन। भारत और एक स्थिर इंडो-पैसिफिक: बंगाल की खाड़ी में समुद्री सुरक्षा चुनौतियों का प्रबंधन: बोस, सोहिनी | यूबसु रे चौधरी, अनसुआ। नई दिल्ली, भारत: ओआरएफ, ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन।

डे, डी. (2024). अंडमान और निकोबार द्वीप समूह: इंडो-पैसिफिक में भारत की नई समुद्री सीमा। इंडो पैसिफिक में भारत और आसियान: रास्ते और खतरे (पृष्ठ 189-207)। सिंगापुर: स्प्रिंगर नेचर सिंगापुर।

चक्रवर्ती, आई. (2025)। हिंद महासागर में पारंपरिक खतरों के बीच भारत के समुद्री विमर्श में अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की भू-रणनीतिक प्रासंगिकता को प्रासंगिक बनाना। जर्नल ऑफ टेरिटोरियल एंड मैरीटाइम स्टडीज, 12 (1), 34-49।

पिल्लई, एस., अंडमान निकोबार कमांड अनुभव से संयुक्तता के सबक।

Maritime Domain Awareness (MDA) in the Indo-Pacific and the Way Ahead for Indo-Pacific Partnership for MDA (IPMDA) | Vivekananda International Foundation

https://cenjows.in/wp-content/uploads/2022/03/Geo_Strategic_and_Geo_Econonics_by_Col_Arvin_der_Singh.pdf

<https://dras.in/strategic-importance-of-andaman-and-nicobar-command-a-revaluation/>

<https://www.proquest.com/scholarly-journals/strengthening-andaman-nicobar-command/docview/1728242326/se-2>

https://www.ejsss.net.in/uploads/172/9675_pdf.pdf

https://idsa.in/system/files/policybrief/Andaman_Nicobar_DG-26-06-2020_com.pdf

<https://www.orfonline.org/research/india-and-a-stable-indo-pacific-managing-maritime-security-challenges-in-the-bay-of-bengal>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1799065>

https://books.google.co.in/books?id=vXHOEAAAQBAJ&pg=PT87&dq=andaman+nicobar+command+pdf&hl=en&newbks=1&newbks_redir=1&sa=X&ved=2ahUKEwiXr-v0rLyNAxVAS3ADHen_L-EQ6AF6BAgIEAM

https://books.google.co.in/books?id=wkNh65X88ycC&printsec=frontcover&dq=andaman+nicobar+command+pdf&hl=en&newbks=1&newbks_redir=1&sa=X&ved=2ahUKEwiXr-v0rLyNAxVAS3ADHen_L-EQ6AF6BAgHEAM